डॉ.महेन्द्र अग्रवाल
शिवपुरी, मध्यप्रदेश

1

शाखों पे हैं वीरानियां पत्ते जो झड़ गये
आंधी का हाल ये था कि बरगद उखड़ गये

कुछ इस तरह मिला है ये माज़ी मेरे गले
मंज़र तमाम उम्र के आंखों में गड़ गये

वो ख़्वाब जो थे फूल से ताज़ा चुने हुए
मंडी में इतनी देर से आये कि सड़ गये

दो चार बार हंस के मिले जो बहार से
खामोशियों के रंग हमीं पर बिगड़ गये

शर्तें नई बनाई थीं यूं इंतख़ाब की
घोड़े भगे तो तेज़ थे फिर भी पिछड़ गये

फैशन डिजाइनिंग की है तालीम कुछ अलग
ऐसी हवा चली कि बदन सब उघड़ गये

2

उदासी को लिए जब घर गये थे
सभी उम्मीद से थे मर गये थे

नई दुनिया में नियमों का अजूबा
भले जो लोग थे सब डर गये थे

उठे थे बोझ कम करने वो मेरा
मेरी छाती पे पत्थर धर गये थे

अभी तक रो रहा हूं घर में बैठा
मेरे अपने भी ऐसा कर गये थे

किसी की बज़्म में अपमान सहने
नहीं जाना था हमको पर गये थे

रहे सत्ता में वो भी छह महीने
नई पीढ़ी के वारिस तर गये थे

हवा ने पेड़ से माफी भी मांगी
मगर पत्ते तो सारे झर गये थे